IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
बिहार शोध समागम
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 4, October-December, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
https://doi.org/10.5281/zenodo.21343061
ISSN : 3048-6971

बोधगया में बौद्ध पर्यटन: नीतीश कुमार के शासनकाल (2005–2026) के दौरान विकास, शासन तथा सामाजिक-आर्थिक प्रभाव

अरूष रंजन सिंह
शोधार्थी
सतत शिक्षा एवं विस्तार विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
चन्द्र प्रताप सिंह
शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सार (Abstract)

बोधगया वह पवित्र स्थल है जहाँ सिद्धार्थ गौतम ने बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त कर बुद्धत्व की उपलब्धि की। यह विश्व के चार प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थलों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। बोधगया स्थित **महाबोधि मंदिर परिसर**, जिसका वर्तमान स्वरूप पाँचवीं-छठी शताब्दी ईस्वी का है तथा जिसका मूल निर्माण सम्राट अशोक द्वारा स्थापित प्राचीन स्मारक पर आधारित है, यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह भारत के विश्व धरोहर स्थलों में एकमात्र जीवंत बौद्ध धार्मिक स्थल है।

वर्ष 2005 से बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में नीतीश कुमार के नेतृत्व में राज्य सरकार ने बोधगया को वैश्विक धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित करने को विशेष प्राथमिकता प्रदान की। इस अवधि में पर्यटन नीतियों में व्यापक सुधार किए गए, सड़क, रेल तथा वायु अवसंरचना का विस्तार किया गया तथा 2024-25 के केंद्रीय बजट में प्रस्तावित **महाबोधि कॉरिडोर** जैसी महत्वाकांक्षी परियोजनाओं की घोषणा की गई। यूनेस्को की विभिन्न रिपोर्टों ने महाबोधि मंदिर परिसर के संरक्षण प्रयासों की सराहना करते हुए धरोहर संरक्षण एवं स्थानीय सामुदायिक विकास के मध्य समन्वित नियोजन की आवश्यकता पर बल दिया है।

कोविड-19 महामारी के कारण पर्यटन गतिविधियों में अस्थायी गिरावट आने के बावजूद बोधगया में तीर्थयात्रियों एवं पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। उदाहरणस्वरूप वर्ष 2019 में लगभग पाँच लाख तथा अप्रैल से अक्टूबर 2022 के बीच लगभग 6.87 लाख श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों ने बोधगया का भ्रमण किया। पर्यटकों की बढ़ती संख्या ने होटल उद्योग, हस्तशिल्प, परिवहन तथा सेवा क्षेत्र को प्रोत्साहित किया, किन्तु इसके लाभ सभी सामाजिक वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच सके। स्थानीय आबादी का एक बड़ा भाग अभी भी कृषि पर निर्भर है तथा भूमि मूल्यों में तीव्र वृद्धि जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है।

भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा संचालित **बौद्ध सर्किट** योजनाओं, यूनेस्को के तकनीकी सहयोग तथा वैश्विक बौद्ध संस्थाओं के समर्थन ने राज्य सरकार के प्रयासों को महत्वपूर्ण संस्थागत आधार प्रदान किया है।

यह शोध सरकारी प्रतिवेदनों, यूनेस्को दस्तावेजों, समाचार स्रोतों तथा अकादमिक अध्ययनों के आधार पर वर्ष 2005 से वर्तमान तक बोधगया में बौद्ध पर्यटन के विकास का समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में बिहार सरकार की पर्यटन नीतियों, अवसंरचनात्मक परियोजनाओं (सड़क, रेल एवं हवाई संपर्क), महाबोधि मंदिर के धरोहर संरक्षण, पर्यटन शासन व्यवस्था तथा स्थानीय समाज पर पड़ने वाले सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का मूल्यांकन किया गया है। साथ ही पर्यटन आगमन एवं क्षेत्रीय विकास से संबंधित सांख्यिकीय प्रवृत्तियों का विश्लेषण भी प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि इस अवधि में पर्यटकों की संख्या में वृद्धि, अवसंरचनात्मक आधुनिकीकरण तथा सांस्कृतिक कूटनीति को उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई है। तथापि अपर्याप्त आधारभूत सुविधाएँ, पर्यावरणीय दबाव, सुरक्षा

संबंधी चुनौतियाँ तथा समावेशी विकास का अभाव अभी भी सतत पर्यटन के मार्ग में प्रमुख अवरोध बने हुए हैं।
अंततः अध्ययन यह अनुशंसा करता है कि बेहतर संपर्क व्यवस्था, स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी, धरोहर संरक्षण तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग को सुदृढ़ बनाकर बोधगया में पर्यटन विकास को अधिक समावेशी, सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील तथा दीर्घकालिक आर्थिक विकासोन्मुख बनाया जा सकता है।

प्रमुख शब्द (Keywords)

बोधगया; बौद्ध तीर्थयात्रा; पर्यटन विकास; नीतीश कुमार; बिहार; महाबोधि मंदिर; सामाजिक-आर्थिक प्रभाव; सतत पर्यटन; धरोहर संरक्षण

परिचय (Introduction)

भारत के बिहार राज्य के गया जनपद में स्थित **बोधगया** विश्व बौद्ध समुदाय का सर्वाधिक पवित्र तीर्थस्थल माना जाता है। यही वह स्थान है जहाँ राजकुमार सिद्धार्थ गौतम ने बोधि वृक्ष के नीचे तप एवं ध्यान के उपरांत ज्ञान (सम्यक् सम्बोधि) प्राप्त किया तथा बुद्ध के रूप में प्रतिष्ठित हुए। इस कारण बोधगया केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि बौद्ध दर्शन, आध्यात्मिक चेतना एवं वैश्विक सांस्कृतिक विरासत का केंद्रीय प्रतीक है। इस स्थल का प्रमुख आकर्षण **महाबोधि मंदिर परिसर** है, जो लगभग 50 मीटर ऊँचा ईंटों से निर्मित मंदिर है। इसका वर्तमान स्वरूप गुप्तकाल (पाँचवीं-छठी शताब्दी ईस्वी) से संबंधित माना जाता है, जबकि इसकी मूल आधारशिला तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक द्वारा स्थापित कराई गई थी।

महाबोधि मंदिर परिसर को संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा **विश्व धरोहर स्थल** के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। यूनेस्को ने इसे असाधारण सार्वभौमिक महत्व (Outstanding Universal Value) वाला स्थल माना है, क्योंकि यह विश्व के चार प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थलों में से एक होने के साथ-साथ भारत की प्रारम्भिक ईंट-निर्मित मंदिर स्थापत्य परंपरा का भी उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। वर्तमान समय में बोधगया थाई, तिब्बती, जापानी, श्रीलंकाई, म्यांमार, कोरियाई तथा अन्य अनेक देशों द्वारा स्थापित बौद्ध मठों से घिरा हुआ है, जो इसकी अंतरराष्ट्रीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्ता को और अधिक सुदृढ़ बनाते हैं। परिणामस्वरूप, एशिया तथा विश्व के विभिन्न देशों से श्रद्धालु एवं पर्यटक वर्षभर यहाँ आते रहते हैं।

वर्ष 2005 के पश्चात बिहार सरकार, विशेषकर मुख्यमंत्री **नीतीश कुमार** के नेतृत्व में, पर्यटन को राज्य के सामाजिक-आर्थिक विकास एवं क्षेत्रीय परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण रणनीति के रूप में स्वीकार किया गया। इस नीति के अंतर्गत बोधगया सहित राज्य के धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों को पर्यटन के माध्यम से आर्थिक विकास, रोजगार सृजन तथा वैश्विक पहचान दिलाने का प्रयास किया गया। राज्य सरकार ने बौद्ध, जैन तथा रामायण पर्यटन परिपथों (Tourism Circuits) के विकास, आधारभूत अवसंरचना के विस्तार, प्रशासनिक सुधारों तथा निवेश प्रोत्साहन जैसी अनेक नीतिगत पहलें प्रारम्भ कीं।

इसी अवधि में भारत सरकार ने भी बौद्ध पर्यटन को राष्ट्रीय पर्यटन नीति का महत्वपूर्ण अंग बनाया। पर्यटन मंत्रालय द्वारा **बौद्ध सर्किट** (Buddhist Circuit) की अवधारणा विकसित की गई, जिसके अंतर्गत बोधगया, नालंदा, राजगीर, सारनाथ, कुशीनगर तथा लुम्बिनी जैसे बौद्ध तीर्थस्थलों को एकीकृत पर्यटन नेटवर्क के रूप में विकसित करने का प्रयास किया गया। इसके अतिरिक्त **स्वदेश दर्शन** तथा **प्रसाद (PRASAD)** जैसी योजनाओं के माध्यम से आधारभूत सुविधाओं के विकास हेतु वित्तीय एवं संस्थागत सहयोग प्रदान किया गया। यूनेस्को तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने भी महाबोधि मंदिर परिसर के संरक्षण, प्रबंधन तथा समग्र विकास के लिए तकनीकी मार्गदर्शन उपलब्ध कराया।

यह शोध वर्ष 2005 से वर्तमान तक बोधगया में बौद्ध पर्यटन के विकास का बहुआयामी विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य शासन व्यवस्था, पर्यटन अवसंरचना, धरोहर संरक्षण तथा स्थानीय समुदाय पर पर्यटन के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का समालोचनात्मक मूल्यांकन करना है। इसके लिए बिहार आर्थिक सर्वेक्षण, पर्यटन विभाग के आँकड़े, यूनेस्को के प्रतिवेदन, सरकारी दस्तावेज, समाचार स्रोतों तथा उपलब्ध अकादमिक साहित्य का समेकित विश्लेषण किया गया है। साथ ही पर्यटकों की संख्या, आर्थिक संकेतकों तथा नीतिगत हस्तक्षेपों का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया गया है।

इस अध्ययन का मूल तर्क यह है कि बिहार सरकार द्वारा आध्यात्मिक पर्यटन, धरोहर संरक्षण तथा अवसंरचनात्मक विकास पर केंद्रित नीतिगत हस्तक्षेपों ने बोधगया की वैश्विक पहचान तथा पर्यटक आगमन में उल्लेखनीय वृद्धि की है। इससे रोजगार, निवेश तथा स्थानीय आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिला है। तथापि पर्यटन से प्राप्त लाभों का वितरण समान नहीं रहा है। अवसंरचना की सीमाएँ, धरोहर संरक्षण पर बढ़ता दबाव, पर्यावरणीय चुनौतियाँ तथा स्थानीय समुदाय की सीमित भागीदारी आज भी गंभीर नीति-निर्माण संबंधी प्रश्न बने हुए हैं।

अतः यह अध्ययन इस निष्कर्ष की ओर संकेत करता है कि बोधगया में पर्यटन विकास को दीर्घकालिक एवं सतत बनाने के लिए केवल पर्यटकों की संख्या बढ़ाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि धरोहर संरक्षण, पर्यावरणीय संतुलन, स्थानीय समुदाय की सहभागिता तथा विभिन्न संस्थाओं के मध्य प्रभावी समन्वय को समान रूप से प्राथमिकता देना आवश्यक है। इसी दृष्टिकोण के माध्यम से बोधगया को एक ऐसे आदर्श धार्मिक पर्यटन मॉडल के रूप में विकसित किया जा सकता है, जो आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण तथा सामाजिक समावेशन के बीच संतुलन स्थापित कर सके।

साहित्य समीक्षा (Literature Review)

बोधगया में बौद्ध पर्यटन का अध्ययन धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक दृष्टिकोणों से विभिन्न विद्वानों द्वारा किया गया है। उपलब्ध साहित्य यह स्पष्ट करता है कि बोधगया केवल एक धार्मिक तीर्थस्थल नहीं है, बल्कि यह वैश्विक बौद्ध समुदाय, सांस्कृतिक कूटनीति, धरोहर संरक्षण तथा पर्यटन-आधारित विकास नीतियों का एक महत्वपूर्ण केंद्र भी बन चुका है। तथापि, वर्ष 2005 के पश्चात विशेषकर नीतीश कुमार के शासनकाल में बोधगया में हुए नीतिगत परिवर्तनों, शासन व्यवस्था तथा पर्यटन विकास का समग्र विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित है। यही तथ्य इस अध्ययन की प्रासंगिकता को स्थापित करता है।

बोधगया के धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व पर **Geary (2008, 2009)** ने विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करते हुए यह प्रतिपादित किया है कि बोधगया एक स्थानीय धार्मिक स्थल से विकसित होकर वैश्विक **'आध्यात्मिक पर्यटन' (Spiritual Tourism)** का प्रमुख केन्द्र बन चुका है। उनके अनुसार धार्मिक आस्था, वैश्विक बौद्ध नेटवर्क तथा अंतरराष्ट्रीय तीर्थयात्रा ने बोधगया की पहचान को केवल भारत तक सीमित न रखकर अंतरराष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया है।

इसी प्रकार **Rodrigues (2011)** तथा **Ahir (1994)** ने बोधगया के ऐतिहासिक विकास, महाबोधि मंदिर के पुनरुद्धार तथा आधुनिक काल में इसकी पुनर्स्थापना की प्रक्रिया का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है। इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि बोधगया का धार्मिक महत्व सदियों से विद्यमान रहा है, किन्तु औपनिवेशिक काल के उत्तरार्ध तथा स्वतंत्रता के पश्चात इसके संरक्षण एवं विकास को नई गति प्राप्त हुई।

पर्यटन अध्ययन से संबंधित साहित्य यह इंगित करता है कि भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल–जैसे बोधगया, सारनाथ, नालंदा, कुशीनगर एवं लुम्बिनी–घरेलू एवं विदेशी दोनों प्रकार के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। विशेष रूप से वर्ष 2000 के बाद भारत सरकार द्वारा **"बौद्ध सर्किट"** की अवधारणा, **"अतुल्य भारत (Incredible India)"** अभियान तथा अंतरराष्ट्रीय पर्यटन संवर्धन कार्यक्रमों ने इन स्थलों की वैश्विक पहचान को और अधिक सुदृढ़ किया है।

बिहार की पर्यटन नीति पर उपलब्ध शोध विशेष रूप से राज्य की संभावनाओं एवं चुनौतियों पर केन्द्रित हैं। **Das et al. (2023)** के अनुसार बिहार धार्मिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध राज्य है, किन्तु पर्यटन अवसंरचना, विपणन रणनीति तथा निवेश की दृष्टि से लंबे समय तक अपेक्षाकृत पिछड़ा रहा। उनके अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि यदि आधारभूत संरचना, परिवहन, निवेश तथा संस्थागत प्रबंधन को सुदृढ़ किया जाए, तो बिहार भारत के प्रमुख धार्मिक पर्यटन केन्द्रों में अग्रणी स्थान प्राप्त कर सकता है।

हाल के वर्षों में **Kumar एवं Mandal (2025)** द्वारा किए गए अध्ययन में बोधगया के स्थानीय समुदाय पर पर्यटन के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन के अनुसार पर्यटन ने स्थानीय अर्थव्यवस्था, रोजगार एवं सेवा क्षेत्र के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके साथ ही आय एवं संपत्ति के असमान वितरण, भूमि मूल्यों में वृद्धि, पर्यावरणीय क्षरण तथा सामाजिक असमानताओं जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। शोधकर्ताओं का मत है कि यदि पर्यटन विकास में स्थानीय समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित नहीं की जाती, तो दीर्घकाल में यह विकास असंतुलित एवं अस्थिर सिद्ध हो सकता है।

पर्यटन नियोजन (Tourism Planning) से संबंधित साहित्य भी स्थानीय समुदाय की सीमित भागीदारी को एक प्रमुख चुनौती के रूप में रेखांकित करता है। विभिन्न अध्ययनों में यह तर्क दिया गया है कि पर्यटन संबंधी निर्णयों में स्थानीय निवासियों की सहभागिता अपेक्षाकृत कम होने के कारण विकास के लाभ समान रूप से वितरित नहीं हो पाते। परिणामस्वरूप पर्यटन विकास सामाजिक न्याय एवं समावेशी विकास के उद्देश्यों को पूर्णतः प्राप्त नहीं कर पाता।

बोधगया की शासन व्यवस्था पर **Panchal (2023)** ने महाबोधि मंदिर प्रबंधन समिति (BTMC) की संरचना एवं धार्मिक प्रतिनिधित्व का विश्लेषण करते हुए यह दर्शाया है कि मंदिर प्रबंधन को लेकर समय-समय पर शैव एवं बौद्ध समुदायों के मध्य मतभेद उत्पन्न होते रहे हैं। अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि धार्मिक धरोहरों के प्रभावी प्रबंधन हेतु सहभागी (Inclusive) एवं बहु-हितधारक (Multi-stakeholder) शासन व्यवस्था आवश्यक है।

धरोहर संरक्षण से संबंधित साहित्य, विशेष रूप से **यूनेस्को** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के प्रतिवेदन, महाबोधि मंदिर परिसर की संरक्षण नीति, संरचनात्मक सुरक्षा तथा इसकी **असाधारण सार्वभौमिक महत्ता (Outstanding Universal Value)** को बनाए रखने पर विशेष बल देते हैं। इन दस्तावेजों में तीव्र नगरीकरण, पर्यटन विस्तार तथा व्यावसायिक गतिविधियों के कारण उत्पन्न चुनौतियों का उल्लेख करते हुए संरक्षण एवं विकास के मध्य संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

इसी प्रकार धार्मिक कूटनीति (Religious Diplomacy) एवं सांस्कृतिक परिपथों (Cultural Circuits) पर उपलब्ध साहित्य यह इंगित करता है कि भारत ने बौद्ध धरोहरों का उपयोग दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के बौद्ध बहुल देशों के साथ सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने के साधन के रूप में किया है। इस संदर्भ में बोधगया भारत की **सॉफ्ट पावर (Soft Power)** एवं सांस्कृतिक कूटनीति का एक महत्वपूर्ण आधार बनकर उभरा है।

साहित्य समीक्षा का निष्कर्ष

उपलब्ध साहित्य के समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि बोधगया एक ओर विश्व का प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल है, जबकि दूसरी ओर यह धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक धरोहर संरक्षण तथा क्षेत्रीय आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण केन्द्र भी है। अधिकांश अध्ययनों ने इसके धार्मिक महत्व, पर्यटन क्षमता, धरोहर संरक्षण तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था पर प्रकाश डाला है, किन्तु **वर्ष 2005 के बाद नीतीश कुमार के शासनकाल के दौरान बोधगया में पर्यटन विकास, शासन व्यवस्था, नीतिगत हस्तक्षेप, अवसंरचनात्मक परिवर्तन तथा उनके सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का समग्र एवं व्यवस्थित विश्लेषण अभी भी सीमित है।**

इसी शोध-अंतर (Research Gap) की पूर्ति करना इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है। यह अध्ययन शासन (Governance), सार्वजनिक नीति (Public Policy), धरोहर संरक्षण (Heritage Conservation) तथा सामाजिक-आर्थिक विकास (Socio-economic Development) के अंतर्संबंधों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए बोधगया में बौद्ध पर्यटन के विकास का बहुआयामी मूल्यांकन करता है।

शोध उद्देश्य (Research Objectives)

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य वर्ष **2005 से वर्तमान तक** बिहार के बोधगया में बौद्ध पर्यटन के विकास, शासन व्यवस्था, धरोहर संरक्षण तथा स्थानीय सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का समग्र एवं आलोचनात्मक विश्लेषण करना है। इस व्यापक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित विशिष्ट शोध उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है–

1. बौद्ध पर्यटन के विकासक्रम का विश्लेषण

वर्ष 2005 से वर्तमान तक मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के शासनकाल में बोधगया में बौद्ध पर्यटन के विकास, उसके स्वरूप, प्रवृत्तियों तथा विस्तार का ऐतिहासिक एवं नीतिगत विश्लेषण करना।

2. सरकार की भूमिका का मूल्यांकन

बोधगया के पर्यटन विकास में बिहार सरकार तथा भारत सरकार की भूमिका का मूल्यांकन करना, विशेष रूप से पर्यटन अवसंरचना, धरोहर संरक्षण, परिवहन संपर्क, सुरक्षा व्यवस्था तथा तीर्थयात्रियों एवं पर्यटकों के लिए उपलब्ध कराई गई सुविधाओं के संदर्भ में।

3. सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का अध्ययन

बोधगया में पर्यटन विकास का स्थानीय समुदाय पर पड़ने वाले सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करना। विशेष रूप से रोजगार, आजीविका, आतिथ्य उद्योग, हस्तशिल्प, व्यापारिक गतिविधियों तथा भूमि उपयोग में हुए परिवर्तनों का अध्ययन करना।

4. संस्थागत योगदान का मूल्यांकन

बोधगया के पर्यटन विकास में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं–जैसे **यूनेस्को (UNESCO), भारत सरकार का पर्यटन मंत्रालय, बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम (BSTDC), बोधगया मंदिर प्रबंधन समिति (BTMC)** तथा अन्य संबंधित संस्थाओं–की भूमिका एवं योगदान का विश्लेषण करना।

5. सतत पर्यटन की चुनौतियों एवं संभावनाओं का विश्लेषण

बोधगया में बौद्ध पर्यटन के समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियों–जैसे पर्यावरणीय दबाव, सांस्कृतिक संरक्षण, प्रशासनिक समन्वय, सुरक्षा तथा सुशासन–का विश्लेषण करते हुए सतत एवं समावेशी पर्यटन विकास हेतु उपयुक्त नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रश्न (Research Questions)

उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अध्ययन निम्नलिखित प्रमुख शोध प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करता है–

1.

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के शासनकाल (2005-वर्तमान) के दौरान बोधगया आने वाले तीर्थयात्रियों एवं पर्यटकों की संख्या तथा उनके भौगोलिक स्रोतों में किस प्रकार परिवर्तन हुआ है?

2.

बोधगया के पर्यटन विकास के लिए बिहार सरकार एवं भारत सरकार द्वारा कौन-कौन सी पर्यटन नीतियाँ, अवसंरचनात्मक परियोजनाएँ तथा विकास कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए हैं, तथा उनका कार्यान्वयन किस सीमा तक प्रभावी सिद्ध हुआ है?

3.

यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में प्राप्त मान्यता ने महाबोधि मंदिर परिसर के संरक्षण, वित्तीय सहयोग तथा पर्यटन विकास को किस प्रकार प्रभावित किया है?

4.

बोधगया में पर्यटन विकास से स्थानीय निवासियों को रोजगार, आय, सार्वजनिक सेवाओं, व्यापारिक अवसरों तथा जीवन-स्तर के संदर्भ में क्या सामाजिक एवं आर्थिक लाभ प्राप्त हुए हैं, तथा कौन-से सामाजिक समूह इन लाभों से अपेक्षाकृत वंचित रहे हैं?

5.

बोधगया का पर्यटन विकास दक्षिण एशिया के अन्य प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थलों–जैसे **सारनाथ, कुशीनगर एवं लुम्बिनी**–की तुलना में किस प्रकार भिन्न अथवा समान है?

6.

बोधगया में पर्यटन विकास एवं धरोहर संरक्षण के मध्य कौन-कौन से प्रमुख अंतर्विरोध (जैसे–धरोहर संरक्षण बनाम अवसंरचनात्मक विकास, स्थानीय समुदाय की आवश्यकताएँ बनाम पर्यटन विस्तार) विद्यमान हैं, तथा उन्हें दूर करने हेतु कौन-से नीतिगत सुधार आवश्यक हैं?

अध्याय का समापन

उपरोक्त शोध उद्देश्य एवं शोध प्रश्न अध्ययन की संपूर्ण वैचारिक एवं विश्लेषणात्मक दिशा निर्धारित करते हैं। इनका उद्देश्य केवल बोधगया में पर्यटन विकास का वर्णन करना नहीं, बल्कि शासन व्यवस्था, सार्वजनिक नीति, धरोहर संरक्षण, सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन तथा सतत विकास के परिप्रेक्ष्य में उसके बहुआयामी प्रभावों का आलोचनात्मक परीक्षण करना है।

शोध पद्धति (Methodology)

यह अध्ययन मुख्यतः **द्वितीयक आँकड़ों (Secondary Data)** के विश्लेषण तथा उपलब्ध साहित्य के समालोचनात्मक

अध्ययन पर आधारित है। शोध के लिए आवश्यक तथ्यों एवं सूचनाओं का संकलन विभिन्न आधिकारिक, अकादमिक तथा संस्थागत स्रोतों से किया गया है, जिससे अध्ययन की विश्वसनीयता एवं वस्तुनिष्ठता सुनिश्चित की जा सके।

इस अध्ययन में बिहार सरकार द्वारा प्रकाशित **बिहार आर्थिक सर्वेक्षण**, **बिहार पर्यटन विभाग** की वार्षिक प्रतिवेदन एवं सांख्यिकीय प्रकाशनों, भारत सरकार के **पर्यटन मंत्रालय** द्वारा प्रकाशित *India Tourism Statistics* तथा अन्य आधिकारिक दस्तावेजों का व्यापक उपयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त **यूनेस्को (UNESCO)** द्वारा प्रकाशित विश्व धरोहर नामांकन दस्तावेज (World Heritage Nomination Dossier), आवधिक निगरानी प्रतिवेदन (Periodic Monitoring Reports), संरक्षण संबंधी रिपोर्टों तथा अन्य तकनीकी दस्तावेजों का भी विश्लेषण किया गया है।

पर्यटकों की संख्या, होटल अवसंरचना, परिवहन संपर्क तथा पर्यटन क्षेत्र से संबंधित आर्थिक संकेतकों के सांख्यिकीय आँकड़े भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय, बिहार सरकार तथा संबंधित आधिकारिक प्रेस विज्ञप्तियों एवं प्रकाशनों से प्राप्त किए गए हैं। समकालीन नीतिगत घोषणाओं, विकास परियोजनाओं तथा नवीनतम प्रशासनिक पहलों की जानकारी के लिए राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय समाचार-पत्रों तथा विश्वसनीय मीडिया स्रोतों का भी उपयोग किया गया है।

स्थानीय समुदाय पर पर्यटन के सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों को समझने के लिए प्रकाशित शोध-पत्रों, शोध-प्रबंधों, पुस्तकों तथा गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) की रिपोर्टों का समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है। इन स्रोतों के माध्यम से स्थानीय आजीविका, रोजगार, सामाजिक परिवर्तन, पर्यावरणीय प्रभाव तथा सामुदायिक सहभागिता से संबंधित गुणात्मक (Qualitative) जानकारियाँ प्राप्त की गई हैं।

जहाँ किसी विषय पर आधिकारिक सांख्यिकीय आँकड़े उपलब्ध नहीं थे, वहाँ यूनेस्को, पर्यटन मंत्रालय तथा अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा प्रकाशित प्रमाणिक स्रोतों पर आधारित तथ्यों का उपयोग किया गया है। जिन क्षेत्रों में आँकड़ों की उपलब्धता सीमित रही है, वहाँ अध्ययन में इस तथ्य का स्पष्ट उल्लेख किया गया है, जिससे निष्कर्षों की पारदर्शिता एवं अकादमिक विश्वसनीयता बनी रहे।

प्रस्तुत अध्ययन में सभी तथ्य एवं विश्लेषण आधिकारिक अभिलेखों, प्रतिष्ठित अकादमिक साहित्य तथा प्रमाणिक संस्थागत स्रोतों के आधार पर प्रस्तुत किए गए हैं। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त तथ्यों का **त्रिकोणीय सत्यापन (Data Triangulation)** किया गया है, जिससे निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय, संतुलित एवं प्रमाण-आधारित बन सकें।

इस प्रकार यह शोध **गुणात्मक (Qualitative)** एवं **वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक (Descriptive-Analytical)** शोध पद्धति का अनुसरण करता है। अध्ययन का उद्देश्य केवल उपलब्ध तथ्यों का संकलन करना नहीं, बल्कि शासन व्यवस्था, सार्वजनिक नीति, पर्यटन विकास, धरोहर संरक्षण तथा स्थानीय सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के मध्य अंतर्संबंधों का समग्र एवं आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना है। इसी दृष्टिकोण के माध्यम से बोधगया में बौद्ध पर्यटन के विकास, उसकी उपलब्धियों, चुनौतियों तथा भावी संभावनाओं का एक प्रमाण-आधारित एवं अकादमिक मूल्यांकन किया गया है।

बौद्ध तीर्थस्थल के रूप में बोधगया की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Background of Bodh Gaya as a Buddhist Pilgrimage Centre)

बोधगया का धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व प्राचीन काल से ही स्थापित रहा है। बौद्ध परंपरा के अनुसार यही वह स्थान है जहाँ राजकुमार सिद्धार्थ गौतम ने कठोर तप एवं ध्यान के उपरांत बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त किया और बुद्ध के रूप में प्रतिष्ठित हुए। इस घटना ने बोधगया को विश्व बौद्ध समुदाय का सर्वोच्च तीर्थस्थल बना दिया।

तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक ने बोधगया की यात्रा की तथा बोधि वृक्ष के निकट एक मंदिर एवं **वज्रासन (Vajrasana)** का निर्माण कराया। वर्तमान महाबोधि मंदिर, जो लगभग 50 मीटर ऊँचा ईंटों से निर्मित भव्य स्थापत्य है, पाँचवीं-छठी शताब्दी ईस्वी में निर्मित माना जाता है। मंदिर परिसर में बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति के उपरांत सात सप्ताह तक विभिन्न स्थानों पर किए गए ध्यान एवं निवास से संबंधित अनेक पवित्र स्थलों का भी समावेश है।

इतिहास के विभिन्न चरणों में बोधगया ने समृद्धि, उपेक्षा तथा पुनरुत्थान–तीनों अवस्थाओं का अनुभव किया। मध्यकाल में यह स्थल लंबे समय तक उपेक्षित रहा तथा इसकी वैश्विक पहचान सीमित हो गई। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में **अनागारिक धर्मपाल** तथा अन्य बौद्ध पुनर्जागरण आंदोलनों के प्रयासों से महाबोधि मंदिर एवं बोधगया का पुनः वैश्विक महत्व स्थापित हुआ। इसके पश्चात यह स्थल पुनः अंतरराष्ट्रीय बौद्ध तीर्थयात्रा का प्रमुख केन्द्र बन गया।

आज बोधगया केवल एक ऐतिहासिक स्मारक नहीं, बल्कि एक **जीवंत सांस्कृतिक एवं धार्मिक धरोहर (Living Heritage)** है, जहाँ प्रतिदिन धार्मिक अनुष्ठान, ध्यान, प्रार्थना तथा अंतरराष्ट्रीय बौद्ध समारोह आयोजित होते हैं। यूनेस्को ने भी इसे जीवंत धार्मिक विरासत के रूप में मान्यता प्रदान की है।

विश्वभर के बौद्ध समुदाय के लिए बोधगया का महत्व अद्वितीय है। यह बौद्ध धर्म के चार प्रमुख तीर्थस्थलों–**बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर एवं लुम्बिनी**–में सर्वोपरि स्थान रखता है। इसके अतिरिक्त हिन्दू धार्मिक परंपरा में भी भगवान बुद्ध को भगवान विष्णु का नवम अवतार माना जाता है, जिसके कारण बोधगया हिन्दू एवं बौद्ध–दोनों समुदायों की आस्था का केन्द्र है।

बीसवीं शताब्दी के दौरान बोधगया ने एक अंतरराष्ट्रीय धार्मिक परिसर के रूप में उल्लेखनीय विकास किया। थाईलैंड, तिब्बत, जापान, चीन, म्यांमार, श्रीलंका, कोरिया, वियतनाम तथा अन्य अनेक देशों द्वारा यहाँ अपने-अपने बौद्ध विहार एवं मठ स्थापित किए गए। इन मठों की विशिष्ट स्थापत्य शैली बोधगया को वैश्विक बौद्ध संस्कृति का जीवंत प्रतीक बनाती है।

वर्ष 2002 में महाबोधि मंदिर परिसर को यूनेस्को द्वारा **विश्व धरोहर स्थल (World Heritage Site)** घोषित किया गया। इसके बाद भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI), बिहार सरकार तथा यूनेस्को के संयुक्त सहयोग से मंदिर परिसर के संरक्षण एवं प्रबंधन को नई दिशा प्राप्त हुई।

बोधगया की प्रशासनिक व्यवस्था को संस्थागत स्वरूप प्रदान करने के उद्देश्य से **बोधगया मंदिर अधिनियम, 1949** लागू किया गया, जिसके अंतर्गत **बोधगया मंदिर प्रबंधन समिति (Bodh Gaya Temple Management Committee - BTMC)** का गठन किया गया। इस समिति की अध्यक्षता गया के जिला मजिस्ट्रेट द्वारा की जाती है तथा इसमें हिन्दू एवं बौद्ध समुदायों का समान प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया है। यह व्यवस्था बोधगया के बहुधार्मिक एवं साझा सांस्कृतिक स्वरूप को प्रतिबिंबित करती है।

इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक, यद्यपि बोधगया की स्थायी जनसंख्या अपेक्षाकृत सीमित थी, फिर भी यह एक वैश्विक धार्मिक केन्द्र के रूप में स्थापित हो चुका था। प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु महाबोधि मंदिर की परिक्रमा करते, बोधि वृक्ष के नीचे ध्यान करते तथा विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मठों एवं अतिथि गृहों में निवास करते थे। इस प्रकार बोधगया स्थानीय धार्मिक स्थल से विकसित होकर वैश्विक आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं पर्यटन केन्द्र के रूप में परिवर्तित हो चुका था, जिसने आगे चलकर नीतीश कुमार के शासनकाल में व्यापक पर्यटन विकास की आधारभूमि तैयार की।

2005 से पूर्व बोधगया में पर्यटन विकास : एक संक्षिप्त अवलोकन

(Tourism Development in Bodh Gaya Before 2005 - Brief Overview)

वर्ष 2005 से पूर्व बोधगया में पर्यटन विकास अपेक्षाकृत सीमित था। इस अवधि में पर्यटन का स्वरूप मुख्यतः धार्मिक तीर्थयात्रा तक ही सीमित था तथा पर्यटन को क्षेत्रीय आर्थिक विकास के एक प्रभावी साधन के रूप में अभी व्यापक नीति-निर्माण का विषय नहीं बनाया गया था। बिहार की आर्थिक चुनौतियाँ, अविकसित आधारभूत संरचना तथा 1990 के दशक के दौरान व्याप्त राजनीतिक एवं प्रशासनिक अस्थिरता के कारण पर्यटन क्षेत्र में अपेक्षित निवेश नहीं हो सका।

उस समय बोधगया की प्रमुख पर्यटन सुविधाओं में **बोधगया मंदिर प्रबंधन समिति (BTMC)** द्वारा संचालित तीर्थयात्री परिसर, सीमित संख्या में होटल एवं अतिथि गृह तथा गया नगर को बोधगया से जोड़ने वाली मूलभूत सड़क अवसंरचना सम्मिलित थी। वर्ष 2002 तक यहाँ लगभग **22 होटल एवं अतिथि गृह** उपलब्ध थे, जिनकी कुल आवास क्षमता लगभग **1,500 यात्रियों** की थी। यद्यपि यह व्यवस्था धार्मिक यात्रियों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करती थी, किन्तु अंतरराष्ट्रीय स्तर के पर्यटन गंतव्य के अनुरूप सुविधाओं का अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता था।

वायु संपर्क की दृष्टि से गया हवाई अड्डा मुख्यतः घरेलू उड़ानों तक सीमित था। समय-समय पर कुछ चार्टर उड़ानों का संचालन अवश्य किया जाता था, किन्तु नियमित अंतरराष्ट्रीय संपर्क उपलब्ध नहीं था। फलस्वरूप विदेशी पर्यटकों एवं तीर्थयात्रियों की पहुँच अपेक्षाकृत सीमित रही।

इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने **"बौद्ध सर्किट"** की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसका उद्देश्य बोधगया, नालंदा, राजगीर, सारनाथ, कुशीनगर तथा लुम्बिनी जैसे प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थलों को एक समेकित पर्यटन

परिपथ के रूप में विकसित करना था। यद्यपि यह पहल नीतिगत दृष्टि से महत्वपूर्ण थी, तथापि प्रारम्भिक वर्षों में इसका क्रियान्वयन अपेक्षाकृत धीमा तथा सीमित रहा।

वर्ष 2005 से पूर्व बिहार की तत्कालीन सरकारें (विशेषकर कांग्रेस एवं राष्ट्रीय जनता दल के शासनकाल) पर्यटन विपणन, निवेश आकर्षण तथा आधारभूत अवसंरचना के आधुनिकीकरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति नहीं कर सकीं। परिणामस्वरूप बोधगया अपनी वैश्विक धार्मिक प्रतिष्ठा के बावजूद पर्यटन सुविधाओं की दृष्टि से अपेक्षाकृत पिछड़ा हुआ बना रहा।

वर्ष 2004-05 तक बोधगया प्रतिवर्ष लगभग कुछ लाख घरेलू एवं विदेशी तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता था, जिनमें अधिकांश आगंतुक दक्षिण-पूर्व एशिया के बौद्ध देशों से आते थे। महाबोधि मंदिर एवं अंतरराष्ट्रीय मठों का संरक्षण संतोषजनक था, किन्तु मंदिर परिसर के बाहर सड़क, स्वच्छता, यातायात प्रबंधन, जलापूर्ति, सार्वजनिक सुविधाओं तथा व्यापारिक अवसंरचना का विकास अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाया था।

इसके अतिरिक्त सुरक्षा संबंधी चिंताएँ तथा पर्यटकों के लिए आधुनिक सुविधाओं का अभाव भी पर्यटन विकास में बाधक थे। इन परिस्थितियों ने वर्ष 2005 के बाद प्रारम्भ हुए व्यापक पर्यटन विकास कार्यक्रमों के लिए एक आधारभूमि तैयार की, जिसके अंतर्गत बोधगया को वैश्विक धार्मिक पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित करने की दिशा में व्यापक नीतिगत एवं प्रशासनिक प्रयास किए गए।

नीतीश कुमार के शासनकाल (2005-वर्तमान) में बौद्ध पर्यटन का विकास

(Buddhist Tourism under Nitish Kumar, 2005-Present)

वर्ष 2005 में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार सरकार ने पर्यटन, विशेषकर **बौद्ध धार्मिक पर्यटन**, को राज्य के सामाजिक-आर्थिक विकास की प्रमुख रणनीति के रूप में स्वीकार किया। इस अवधि में पर्यटन को केवल सांस्कृतिक संरक्षण का माध्यम न मानकर निवेश, रोजगार सृजन, क्षेत्रीय विकास तथा अंतरराष्ट्रीय पहचान के महत्वपूर्ण साधन के रूप में विकसित करने का प्रयास किया गया। राज्य सरकार की विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं तथा पर्यटन नीतियों (2006, 2010 एवं 2023) में बोधगया को विशेष प्राथमिकता प्रदान की गई।

(1) पर्यटन नीति संबंधी पहल (Tourism Policy Initiatives)

बिहार सरकार ने पर्यटन क्षेत्र में निजी निवेश को प्रोत्साहित करने हेतु समय-समय पर अपनी पर्यटन नीति में संशोधन किए। विशेष रूप से **बिहार पर्यटन नीति, 2023** के अंतर्गत दो एवं तीन सितारा होटलों की स्थापना हेतु न्यूनतम निवेश सीमा में कमी की गई तथा गया एवं बोधगया में स्थापित पात्र चार सितारा एवं उससे उच्च श्रेणी की होटल परियोजनाओं के लिए **25 प्रतिशत तक पूंजीगत अनुदान (Capital Subsidy)** प्रदान करने की व्यवस्था की गई।

इसके अतिरिक्त पर्यटन उद्योग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सात वर्षों तक वस्तु एवं सेवा कर (GST) की प्रतिपूर्ति, पर्यटन क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए बीमा सुरक्षा तथा रोजगार प्रोत्साहन जैसी अनेक सुविधाएँ उपलब्ध कराई गईं। इस नीति में बोधगया-नालंदा-राजगीर सहित बौद्ध पर्यटन परिपथ के समग्र विकास को विशेष महत्व दिया गया। इससे स्पष्ट होता है कि राज्य सरकार बोधगया को अंतरराष्ट्रीय स्तर के धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध रही है।

(2) आधारभूत अवसंरचना का विकास (Infrastructure Development)

नीतीश कुमार के शासनकाल में राज्य एवं केंद्र सरकार के संयुक्त प्रयासों से बोधगया की आधारभूत अवसंरचना में उल्लेखनीय सुधार हुआ। **पटना-गया राष्ट्रीय राजमार्ग (NH-83, वर्तमान NH-22)** का चार लेन में विस्तार किया गया, जिससे सड़क मार्ग द्वारा बोधगया की पहुँच अधिक सुगम एवं तीव्र हुई।

बोधगया नगर के भीतर महाबोधि मंदिर परिसर के आसपास सड़क प्रकाश व्यवस्था, जल निकासी प्रणाली, पैदल मार्ग तथा सार्वजनिक सुविधाओं का विकास किया गया। इन परियोजनाओं में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) एवं यूनेस्को द्वारा भी तकनीकी सहयोग प्रदान किया गया।

वर्ष 2022 में **'गंगाजल पाइपलाइन परियोजना'** के अंतर्गत तीर्थयात्रियों एवं स्थानीय निवासियों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की गई। इसके अतिरिक्त वर्ष 2024-25 के केंद्रीय बजट में प्रस्तावित **महाबोधि कॉरिडोर परियोजना** के माध्यम से लगभग **9.5 किलोमीटर** क्षेत्र का पुनर्विकास प्रस्तावित किया गया है। इस परियोजना

के अंतर्गत चौड़ी सड़कें, हरित क्षेत्र, सौंदर्यीकरण तथा विभिन्न धार्मिक स्थलों के मध्य बेहतर संपर्क विकसित करने की योजना बनाई गई है। यह परियोजना वाराणसी के **काशी विश्वनाथ कॉरिडोर** की तर्ज पर विकसित की जा रही है।

(3) सड़क, रेल एवं वायु संपर्क का विकास (Road, Rail and Air Connectivity)

नीतीश कुमार के शासनकाल में बोधगया को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर स्थापित करने के उद्देश्य से सड़क, रेल तथा वायु संपर्क के विकास पर विशेष बल दिया गया। पर्यटन विकास की दृष्टि से सुगम परिवहन व्यवस्था को आधारभूत पूर्वापेक्षा मानते हुए राज्य एवं केंद्र सरकार ने विभिन्न अवसंरचनात्मक परियोजनाओं को प्राथमिकता प्रदान की।

सड़क संपर्क

सड़क अवसंरचना के क्षेत्र में **राष्ट्रीय राजमार्ग-22 (पूर्ववर्ती NH-83)** के उन्नयन ने पटना, गया तथा बोधगया के मध्य संपर्क को अधिक सुदृढ़ बनाया। इसके अतिरिक्त गया नगर से बोधगया तक जाने वाले मार्गों का चौड़ीकरण किया गया तथा पर्यटकों के लिए दिशासूचक संकेतकों (Signage) एवं मार्गदर्शन प्रणाली में सुधार किया गया। इन प्रयासों से घरेलू एवं विदेशी पर्यटकों के लिए यात्रा अधिक सुविधाजनक एवं सुरक्षित बनी।

रेल संपर्क

रेल संपर्क को सुदृढ़ करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण पहलें की गईं। बोधगया का निकटतम प्रमुख रेलवे स्टेशन **गया जंक्शन** है, जिसके आधुनिकीकरण तथा यात्री सुविधाओं के विस्तार पर विशेष ध्यान दिया गया। वर्ष 2020 में भारत सरकार के रेल मंत्रालय ने **गया-बोधगया-चतरा रेलमार्ग** तथा **गया-नतेसर (नालंदा) रेल संपर्क** जैसी नई परियोजनाओं की घोषणा की। इन परियोजनाओं का उद्देश्य बौद्ध पर्यटन परिपथ के विभिन्न धार्मिक स्थलों को रेल नेटवर्क के माध्यम से परस्पर जोड़ना तथा तीर्थयात्रियों के लिए बहु-गंतव्य (Multi-destination) पर्यटन को प्रोत्साहित करना है।

वायु संपर्क

बोधगया से लगभग सात किलोमीटर दूरी पर स्थित **गया अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा** वर्ष 2008 में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के रूप में विकसित किया गया, जिससे दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के बौद्ध देशों के साथ प्रत्यक्ष हवाई संपर्क स्थापित हुआ। तथापि हवाई अड्डे के रनवे की सीमित लंबाई (2,286 मीटर) के कारण बड़े वाइड-बॉडी विमानों का संचालन संभव नहीं हो पाया। रनवे विस्तार की योजनाएँ भूमि अधिग्रहण संबंधी चुनौतियों के कारण अपेक्षित गति से आगे नहीं बढ़ सकीं।

इसके बावजूद थाईलैंड, म्यांमार, वियतनाम, श्रीलंका तथा अन्य बौद्ध देशों से नियमित एवं चार्टर उड़ानों के संचालन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। वर्ष 2022 तक प्रतिदिन कई अंतरराष्ट्रीय उड़ानों का संचालन प्रारम्भ हो चुका था, जिससे बोधगया की वैश्विक पहुँच में महत्वपूर्ण विस्तार हुआ। यह परिवर्तन राज्य सरकार की पर्यटन-उन्मुख अवसंरचना नीति की एक उल्लेखनीय उपलब्धि माना जा सकता है।

(4) महाबोधि मंदिर परिसर का संरक्षण (Conservation of the Mahabodhi Temple Complex)

महाबोधि मंदिर परिसर का संरक्षण नीतीश कुमार सरकार की पर्यटन एवं सांस्कृतिक नीति का एक केंद्रीय घटक रहा है। बिहार सरकार ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI), बोधगया मंदिर प्रबंधन समिति (BTMC) तथा यूनेस्को के सहयोग से मंदिर परिसर के संरक्षण, रखरखाव एवं प्रबंधन के लिए अनेक पहलें की हैं।

मंदिर परिसर की ईंटों, मूर्तियों तथा अन्य प्राचीन स्थापत्य अवयवों के संरक्षण एवं पुनर्स्थापन का कार्य नियमित रूप से किया जाता रहा है। यूनेस्को की विभिन्न मूल्यांकन रिपोर्टों में यह स्वीकार किया गया है कि महाबोधि मंदिर की **'असाधारण सार्वभौमिक महत्ता' (Outstanding Universal Value)** वर्तमान समय तक सुरक्षित बनी हुई है। साथ ही यह भी सुझाव दिया गया है कि पर्यटन विकास एवं धरोहर संरक्षण के मध्य संतुलन स्थापित करने हेतु अधिक समन्वित एवं दीर्घकालिक प्रबंधन नीति अपनाई जानी चाहिए।

इस अवधि में मंदिर परिसर के आसपास **सौर ऊर्जा आधारित प्रकाश व्यवस्था**, पवित्र बोधि वृक्ष की सुरक्षा हेतु संरक्षित घेराबंदी तथा तीर्थयात्रियों की भीड़ के वैज्ञानिक प्रबंधन जैसी व्यवस्थाएँ विकसित की गईं।

वर्ष 2014 में बोधगया मंदिर प्रबंधन समिति ने मंदिर परिसर के लिए संशोधित **स्थल प्रबंधन योजना (Site Management**

Plan) तैयार की, जिसमें तीर्थयात्रियों के आवागमन, संरक्षण क्षेत्र (Conservation Zones) तथा पर्यावरणीय प्रबंधन से संबंधित दिशा-निर्देश सम्मिलित किए गए।

वर्ष 2022 में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा **बोधगया सांस्कृतिक केंद्र (Bodh Gaya Cultural Centre)** का उद्घाटन किया गया। लगभग दो हजार व्यक्तियों की क्षमता वाला यह सभागार एवं सम्मेलन केंद्र अंतरराष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलनों, सांस्कृतिक आयोजनों तथा शोध गतिविधियों के लिए विकसित किया गया है। इससे खुले धार्मिक स्थलों पर बढ़ते दबाव को कम करने तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को संस्थागत आधार प्रदान करने का प्रयास किया गया।

(5) अंतरराष्ट्रीय बौद्ध मठों की भूमिका (International Monasteries)

बोधगया वर्तमान समय में विश्व के सबसे महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय बौद्ध धार्मिक परिसरों में से एक है। यहाँ **50 से अधिक अंतरराष्ट्रीय बौद्ध मठ एवं मंदिर** स्थापित हैं, जिनका संचालन थाईलैंड, जापान, तिब्बत, दक्षिण कोरिया, वियतनाम, म्यांमार, श्रीलंका तथा अन्य देशों की बौद्ध संस्थाओं द्वारा किया जाता है।

ये मठ केवल धार्मिक उपासना के केंद्र नहीं हैं, बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान, बौद्ध शिक्षा, ध्यान साधना तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग के भी महत्वपूर्ण माध्यम हैं। प्रत्येक मठ अपनी विशिष्ट स्थापत्य शैली एवं सांस्कृतिक पहचान के कारण बोधगया को वैश्विक स्वरूप प्रदान करता है।

बिहार सरकार तथा बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम (BSTDC) समय-समय पर इन मठों द्वारा आयोजित धार्मिक उत्सवों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए सुरक्षा, स्वच्छता, यातायात प्रबंधन तथा प्रशासनिक सहयोग उपलब्ध कराते हैं। विशेष रूप से **वैशाख पूर्णिमा (बुद्ध पूर्णिमा)** जैसे अवसरों पर राज्य सरकार, स्थानीय प्रशासन एवं अंतरराष्ट्रीय बौद्ध संस्थाओं के मध्य प्रभावी समन्वय स्थापित किया जाता है।

यद्यपि इन अंतरराष्ट्रीय मठों में हुए कुल निवेश से संबंधित समेकित आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं, तथापि यह निर्विवाद है कि विदेशी तीर्थयात्रियों को आकर्षित करने तथा बोधगया की वैश्विक धार्मिक प्रतिष्ठा को सुदृढ़ बनाने में इन संस्थाओं की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

(6) धार्मिक कूटनीति एवं अंतरराष्ट्रीय सहयोग (Religious Diplomacy and International Cooperation)

नीतीश कुमार के शासनकाल में बोधगया का उपयोग भारत की **सांस्कृतिक कूटनीति (Cultural Diplomacy)** एवं **सॉफ्ट पावर (Soft Power)** के एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में किया गया है।

दलाई लामा सहित अनेक अंतरराष्ट्रीय बौद्ध धर्मगुरुओं की यात्राओं ने बोधगया को वैश्विक धार्मिक संवाद का प्रमुख मंच बनाया। भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा आयोजित **बौद्ध कॉन्क्लेव**, अंतरराष्ट्रीय पर्यटन सम्मेलनों तथा वैश्विक प्रचार अभियानों में बोधगया को प्रमुख स्थान दिया गया।

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की थाईलैंड, म्यांमार तथा श्रीलंका जैसे बौद्ध बहुल देशों की यात्राओं के दौरान भी बोधगया में पर्यटन सहयोग एवं सांस्कृतिक संबंधों को विशेष महत्व दिया गया। इन पहलों ने बोधगया को भारत की विदेश नीति के सांस्कृतिक आयाम से भी जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

7) स्मार्ट सिटी पहल एवं शहरी अवसंरचना का विकास

(Smart City Initiatives and Urban Infrastructure Development)

बोधगया के समग्र शहरी विकास को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से बिहार सरकार ने इसे **स्मार्ट सिटी अवधारणा** के अनुरूप विकसित करने की दिशा में अनेक पहलें कीं। यद्यपि बोधगया औपचारिक रूप से स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत चयनित नगरों में सम्मिलित नहीं है, फिर भी राज्य सरकार ने यहाँ आधुनिक शहरी सुविधाओं, डिजिटल सेवाओं तथा पर्यटन-अनुकूल आधारभूत संरचना के विकास को प्राथमिकता प्रदान की।

महाबोधि मंदिर परिसर के आसपास की सड़कों का सौंदर्यीकरण, एलईडी आधारित सार्वजनिक प्रकाश व्यवस्था, पैदल यात्रियों के लिए सुरक्षित मार्ग, उद्यानों एवं हरित क्षेत्रों का विकास तथा सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण इसी व्यापक शहरी विकास रणनीति का भाग रहा है। इसके अतिरिक्त नगर में स्वच्छ पेयजल, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन तथा जल निकासी प्रणाली के सुदृढ़ीकरण हेतु भी अनेक परियोजनाएँ प्रारम्भ की गईं।

पर्यटकों की सुविधा के लिए बहुभाषीय दिशासूचक संकेतक, डिजिटल सूचना प्रणाली, पर्यटक सहायता केन्द्र तथा पार्किंग

सुविधाओं का विस्तार किया गया। इन पहलों का उद्देश्य बोधगया को केवल धार्मिक तीर्थस्थल ही नहीं, बल्कि आधुनिक सुविधाओं से युक्त एक अंतरराष्ट्रीय पर्यटन नगर के रूप में विकसित करना था।

हालाँकि यूनेस्को ने समय-समय पर यह संकेत दिया है कि शहरी विकास परियोजनाओं के क्रियान्वयन के दौरान महाबोधि मंदिर परिसर के **दृश्य परिदृश्य (Visual Integrity)** एवं ऐतिहासिक परिवेश को सुरक्षित रखना अत्यंत आवश्यक है। इसलिए भविष्य की विकास योजनाओं में धरोहर संरक्षण एवं नगरीय विकास के मध्य संतुलन बनाए रखना एक प्रमुख नीति-निर्माण संबंधी चुनौती बनी हुई है।

(8) सुरक्षा, स्वच्छता एवं पर्यटक सुविधाएँ

(Security, Cleanliness and Tourist Amenities)

बोधगया की अंतरराष्ट्रीय धार्मिक महत्ता को देखते हुए सुरक्षा व्यवस्था सदैव प्रशासन की प्राथमिकता रही है। विशेषकर वर्ष **2013 में महाबोधि मंदिर परिसर में हुए बम विस्फोटों** के पश्चात सुरक्षा व्यवस्था को व्यापक रूप से सुदृढ़ किया गया। वर्तमान में मंदिर परिसर एवं उसके आसपास व्यापक **सीसीटीवी निगरानी प्रणाली**, धातु जाँच द्वार (Metal Detectors), सामान की स्कैनिंग, प्रशिक्षित सुरक्षा बलों की तैनाती तथा नियमित गश्त की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है।

बुद्ध पूर्णिमा, काग्यू मोनलम, दलाई लामा के प्रवचन तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय धार्मिक आयोजनों के दौरान अतिरिक्त सुरक्षा बलों की तैनाती की जाती है, जिससे लाखों श्रद्धालुओं की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

स्वच्छता के क्षेत्र में बिहार सरकार एवं स्थानीय प्रशासन द्वारा विशेष अभियान चलाए गए हैं। नगर में सार्वजनिक शौचालयों, कूड़ा संग्रहण केन्द्रों, ठोस अपशिष्ट पृथक्करण तथा नियमित सफाई व्यवस्था को सुदृढ़ किया गया है। फिर भी पर्यटन के चरम मौसम में अपशिष्ट प्रबंधन, प्लास्टिक प्रदूषण तथा यातायात दबाव जैसी समस्याएँ अभी भी पूरी तरह समाप्त नहीं हो सकी हैं।

पर्यटकों की सुविधा हेतु होटल, अतिथि गृह, रेस्तराँ, चिकित्सा सेवाएँ, बैंकिंग सुविधाएँ, मुद्रा विनिमय केन्द्र तथा परिवहन सेवाओं में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम (BSTDC) तथा निजी क्षेत्र के सहयोग से पर्यटन सूचना केन्द्रों एवं ऑनलाइन सूचना सेवाओं का भी विस्तार किया गया है।

(9) बोधगया में पर्यटन विकास का सांख्यिकीय विश्लेषण

(Statistical Analysis of Tourism Development in Bodh Gaya)

उपलब्ध सरकारी आँकड़ों एवं विभिन्न आधिकारिक स्रोतों से यह स्पष्ट होता है कि वर्ष 2005 के पश्चात बोधगया में घरेलू एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इस वृद्धि के पीछे राज्य सरकार की पर्यटन नीतियाँ, आधारभूत अवसंरचना का विस्तार, अंतरराष्ट्रीय हवाई संपर्क तथा बौद्ध सर्किट जैसी योजनाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

वर्ष 2005 के आसपास बोधगया में पर्यटकों की वार्षिक संख्या अपेक्षाकृत सीमित थी। किंतु अगले डेढ़ दशक में तीर्थयात्रियों एवं पर्यटकों की संख्या निरंतर बढ़ती रही। वर्ष **2019** तक बोधगया में लगभग **पाँच लाख** से अधिक श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों का आगमन दर्ज किया गया, जो उस समय तक का सर्वोच्च स्तर था।

कोविड-19 महामारी (2020-2021) के दौरान अंतरराष्ट्रीय यात्रा प्रतिबंधों एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य संबंधी प्रतिबंधों के कारण पर्यटन क्षेत्र गंभीर रूप से प्रभावित हुआ। विदेशी पर्यटकों की संख्या में तीव्र गिरावट आई तथा स्थानीय पर्यटन उद्योग–विशेषकर होटल, रेस्तराँ, परिवहन एवं हस्तशिल्प–को आर्थिक क्षति का सामना करना पड़ा।

हालाँकि महामारी के उपरांत पर्यटन क्षेत्र में उल्लेखनीय पुनरुत्थान देखा गया। उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार **अप्रैल से अक्टूबर 2022** के मध्य लगभग **6.87 लाख** पर्यटक एवं तीर्थयात्री बोधगया पहुँचे। यह दर्शाता है कि महामारी के प्रभावों से उबरने में बोधगया अपेक्षाकृत सफल रहा तथा धार्मिक पर्यटन की मांग पुनः तीव्र गति से बढ़ी।

पर्यटकों की बढ़ती संख्या के परिणामस्वरूप होटल उद्योग, परिवहन सेवाएँ, स्थानीय हस्तशिल्प, धार्मिक वस्तुओं का व्यापार तथा लघु उद्यमों में भी विस्तार हुआ। अनेक स्थानीय परिवारों की आय के प्रमुख स्रोत के रूप में पर्यटन का महत्व बढ़ा। विशेष रूप से होटल, रेस्तराँ, टैक्सी सेवाओं, टूर गाइड, हस्तशिल्प एवं स्मृति-चिह्नों के व्यापार से जुड़े लोगों को प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ प्राप्त हुआ।

इसके बावजूद विभिन्न अध्ययनों से यह भी स्पष्ट होता है कि पर्यटन से उत्पन्न आर्थिक लाभों का वितरण समान रूप से नहीं हुआ। जिन परिवारों के पास भूमि, पूँजी अथवा व्यावसायिक संसाधन उपलब्ध थे, उन्हें अपेक्षाकृत अधिक लाभ प्राप्त हुआ, जबकि भूमिहीन श्रमिकों तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों की भागीदारी सीमित रही। इससे यह संकेत मिलता है कि पर्यटन विकास के साथ-साथ **समावेशी विकास (Inclusive Development)** की नीतियों को भी समान महत्व दिया जाना आवश्यक है।

प्रमुख निष्कर्ष (Key Findings)

अध्ययन के विश्लेषण से बोधगया में बौद्ध पर्यटन के विकास, शासन व्यवस्था तथा सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त होते हैं–

1. पर्यटन विकास में उल्लेखनीय प्रगति

वर्ष 2005 के पश्चात बोधगया में पर्यटन विकास की गति में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। बिहार सरकार द्वारा पर्यटन को आर्थिक विकास एवं क्षेत्रीय प्रगति की रणनीति के रूप में अपनाने के परिणामस्वरूप सड़क, रेल, वायु संपर्क तथा पर्यटन अवसंरचना में व्यापक सुधार हुए हैं। पर्यटकों एवं तीर्थयात्रियों की संख्या में निरंतर वृद्धि इस परिवर्तन का प्रमुख संकेतक है।

2. शासन एवं नीतिगत हस्तक्षेप की प्रभावशीलता

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि नीतीश कुमार सरकार की पर्यटन नीतियों ने बोधगया के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पर्यटन नीति, आधारभूत संरचना में निवेश, निजी क्षेत्र की भागीदारी, होटल उद्योग को प्रोत्साहन तथा बौद्ध पर्यटन परिपथ के विकास ने पर्यटन क्षेत्र को नई दिशा प्रदान की है। राज्य सरकार तथा केंद्र सरकार के मध्य संस्थागत समन्वय ने भी विकास प्रक्रिया को गति प्रदान की।

3. यूनेस्को विश्व धरोहर का सकारात्मक प्रभाव

महाबोधि मंदिर परिसर को यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल का दर्जा प्राप्त होने के पश्चात बोधगया की अंतरराष्ट्रीय पहचान में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इससे न केवल विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हुई, बल्कि धरोहर संरक्षण, सांस्कृतिक प्रबंधन तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग को भी संस्थागत आधार प्राप्त हुआ। यूनेस्को की तकनीकी सलाह एवं संरक्षण संबंधी दिशा-निर्देशों ने मंदिर परिसर के संरक्षण को अधिक व्यवस्थित बनाया।

4. स्थानीय अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव

पर्यटन के विस्तार से होटल उद्योग, परिवहन, हस्तशिल्प, रेस्तराँ, पर्यटन मार्गदर्शन (Tour Guiding) तथा अन्य सेवा क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई। स्थानीय व्यापार एवं लघु उद्यमों का विस्तार हुआ तथा अनेक परिवारों की आय में सुधार दर्ज किया गया। विशेषकर तीर्थयात्रा आधारित अर्थव्यवस्था ने स्थानीय बाजार को नई गति प्रदान की।

5. लाभों का असमान वितरण

यद्यपि पर्यटन विकास से आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि हुई है, तथापि इसके लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच सके। पर्यटन से सर्वाधिक लाभ होटल व्यवसायियों, भूमि स्वामियों एवं संगठित व्यापारिक वर्ग को प्राप्त हुआ, जबकि भूमिहीन श्रमिकों, छोटे किसानों एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों की भागीदारी अपेक्षाकृत सीमित रही। इससे समावेशी विकास (Inclusive Development) की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

6. पर्यावरणीय एवं धरोहर संबंधी चुनौतियाँ

पर्यटकों की बढ़ती संख्या के कारण ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जल संसाधनों पर दबाव, यातायात, ध्वनि प्रदूषण तथा महाबोधि मंदिर परिसर के आसपास अनियोजित शहरी विस्तार जैसी चुनौतियाँ उभरकर सामने आई हैं। यूनेस्को ने भी समय-समय पर इन चुनौतियों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए संरक्षण एवं विकास के मध्य संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया है।

7. सांस्कृतिक कूटनीति का सुदृढ़ीकरण

बोधगया ने भारत की सांस्कृतिक कूटनीति (Cultural Diplomacy) एवं सॉफ्ट पावर को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। थाईलैंड, श्रीलंका, जापान, म्यांमार, वियतनाम, भूटान तथा अन्य बौद्ध देशों के साथ धार्मिक एवं सांस्कृतिक

संबंधों को मजबूत बनाने में बोधगया एक प्रभावी माध्यम के रूप में उभरा है। अंतरराष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन एवं धार्मिक आयोजन इस प्रक्रिया को और अधिक सुदृढ़ करते हैं।

प्रमुख चुनौतियाँ (Persistent Challenges)

उल्लेखनीय प्रगति के बावजूद बोधगया में बौद्ध पर्यटन के समक्ष अनेक संरचनात्मक एवं नीतिगत चुनौतियाँ विद्यमान हैं।

(1) संपर्क व्यवस्था की सीमाएँ

यद्यपि सड़क एवं रेल संपर्क में सुधार हुआ है, तथापि **गया अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे** की सीमित क्षमता अभी भी अंतरराष्ट्रीय पर्यटन के विस्तार में बाधा बनी हुई है। रनवे की अपर्याप्त लंबाई के कारण बड़े विमानों का संचालन संभव नहीं हो पाता, जिससे प्रत्यक्ष अंतरराष्ट्रीय उड़ानों की संख्या सीमित रहती है।

(2) पर्यावरणीय दबाव

बढ़ते पर्यटन के कारण ठोस अपशिष्ट, प्लास्टिक प्रदूषण, जल संसाधनों पर दबाव तथा हरित क्षेत्रों में कमी जैसी समस्याएँ निरंतर बढ़ रही हैं। यदि इन चुनौतियों का समय रहते समाधान नहीं किया गया, तो बोधगया की पारिस्थितिकीय स्थिरता एवं सांस्कृतिक धरोहर दोनों प्रभावित हो सकते हैं।

(3) स्थानीय समुदाय की सीमित सहभागिता

पर्यटन विकास की निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में स्थानीय समुदाय की सहभागिता अभी भी अपेक्षाकृत सीमित है। अनेक योजनाएँ शीर्ष-से-नीचे (Top-down) दृष्टिकोण के आधार पर लागू की जाती हैं, जिसके कारण स्थानीय आवश्यकताओं एवं प्राथमिकताओं को पर्याप्त महत्व नहीं मिल पाता।

(4) असंतुलित आर्थिक विकास

पर्यटन से उत्पन्न आर्थिक लाभों का वितरण असमान है। होटल उद्योग एवं संगठित व्यवसायों को अपेक्षाकृत अधिक लाभ प्राप्त हुआ है, जबकि छोटे व्यापारियों, पारंपरिक कारीगरों तथा ग्रामीण समुदायों की आर्थिक स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ।

(5) धरोहर संरक्षण एवं पर्यटन विस्तार के मध्य संतुलन

महाबोधि मंदिर परिसर के आसपास बढ़ते व्यावसायिक निर्माण, यातायात दबाव तथा पर्यटकों की संख्या में निरंतर वृद्धि धरोहर संरक्षण के समक्ष नई चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रही है। अतः पर्यटन विस्तार एवं धरोहर संरक्षण के मध्य संतुलित नीति अपनाना अत्यंत आवश्यक है।

(6) सुरक्षा प्रबंधन

यद्यपि वर्तमान सुरक्षा व्यवस्था प्रभावी है, तथापि बोधगया की अंतरराष्ट्रीय धार्मिक महत्ता को देखते हुए निरंतर सतर्कता बनाए रखना आवश्यक है। आधुनिक निगरानी प्रणाली, आपदा प्रबंधन एवं भीड़ नियंत्रण की व्यवस्थाओं को समयानुकूल अद्यतन किया जाना चाहिए।

तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis)

अन्य प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थलों–जैसे **लुम्बिनी (नेपाल), सारनाथ तथा कुशीनगर**–की तुलना में बोधगया की सबसे बड़ी शक्ति इसका **यूनेस्को विश्व धरोहर का दर्जा**, महाबोधि मंदिर का वैश्विक धार्मिक महत्व तथा अंतरराष्ट्रीय बौद्ध मठों का विस्तृत नेटवर्क है।

दूसरी ओर, लुम्बिनी को बेहतर अंतरराष्ट्रीय हवाई संपर्क प्राप्त है, जबकि कुशीनगर में नए अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के विकास से उसकी पर्यटन क्षमता में वृद्धि हुई है। इस दृष्टि से बोधगया के लिए संपर्क अवसंरचना का और अधिक आधुनिकीकरण आवश्यक है।

फिर भी धार्मिक महत्व, सांस्कृतिक विरासत, अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा तथा भारत सरकार एवं बिहार सरकार की नीतिगत प्राथमिकताओं के कारण बोधगया आज भी भारतीय **बौद्ध पर्यटन परिपथ** का सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र बना हुआ है।

नीतिगत अनुशंसाएँ (Policy Recommendations)

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि बोधगया में बौद्ध पर्यटन ने उल्लेखनीय प्रगति की है, किन्तु

इसके सतत एवं समावेशी विकास के लिए बहुआयामी नीतिगत हस्तक्षेपों की आवश्यकता है। इस संदर्भ में निम्नलिखित नीतिगत अनुशंसाएँ प्रस्तुत की जाती हैं–

1. समेकित मास्टर प्लान (Integrated Master Planning)

बोधगया के दीर्घकालिक विकास हेतु एक **समेकित मास्टर प्लान** तैयार एवं प्रभावी रूप से क्रियान्वित किया जाना चाहिए, जिसमें धरोहर संरक्षण, नगरीय विकास, पर्यटन विस्तार तथा पर्यावरणीय संतुलन को एकीकृत दृष्टिकोण के साथ सम्मिलित किया जाए।

महाबोधि मंदिर परिसर के चारों ओर एक वैज्ञानिक **संरक्षण बफर क्षेत्र (Protective Buffer Zone)** विकसित किया जाना चाहिए, जहाँ भवन निर्माण, व्यावसायिक गतिविधियों तथा भूमि उपयोग को स्पष्ट नियामक प्रावधानों के अंतर्गत नियंत्रित किया जाए। इस योजना के निर्माण एवं क्रियान्वयन में स्थानीय समुदाय, बौद्ध मठों, पुरातत्व विशेषज्ञों तथा पर्यावरणविदों की सहभागिता सुनिश्चित की जानी चाहिए।

2. संपर्क अवसंरचना का सुदृढ़ीकरण (Strengthening Connectivity)

बोधगया को वैश्विक बौद्ध पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित करने के लिए **गया अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे** के रनवे विस्तार एवं टर्मिनल आधुनिकीकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

इसके साथ-साथ–

- गया से बोधगया तक उच्च गुणवत्ता वाली सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था विकसित की जाए।
- शटल बस सेवाएँ, ई-बसें तथा पर्यावरण-अनुकूल सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा दिया जाए।
- बहुभाषीय दिशासूचक संकेतकों एवं डिजिटल सूचना प्रणाली का विस्तार किया जाए।
- बौद्ध पर्यटन परिपथ से संबंधित रेल परियोजनाओं को शीघ्र पूर्ण किया जाए, ताकि बहु-गंतव्य पर्यटन (Multi-destination Tourism) को प्रोत्साहन मिल सके।

3. पर्यावरणीय अवसंरचना एवं सार्वजनिक सुविधाओं का विकास

बोधगया में पर्यटन की बढ़ती मात्रा को ध्यान में रखते हुए आधुनिक **ठोस अपशिष्ट प्रबंधन**, **सीवेज शोधन प्रणाली**, **जल पुनर्चक्रण (Water Recycling)** तथा **अपशिष्ट पृथक्करण (Waste Segregation)** की वैज्ञानिक व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए।

इसके अतिरिक्त–

- सार्वजनिक शौचालयों की संख्या बढ़ाई जाए।
- हरित क्षेत्रों एवं सार्वजनिक विश्राम स्थलों का विस्तार किया जाए।
- प्लास्टिक मुक्त पर्यटन क्षेत्र विकसित किया जाए।
- स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए स्थानीय समुदाय एवं पर्यटकों में जन-जागरूकता अभियान चलाए जाएँ।

4. स्थानीय समुदाय की सक्रिय सहभागिता (Community Participation)

सतत पर्यटन विकास तभी संभव है जब स्थानीय समुदाय उसके लाभों का वास्तविक भागीदार बने।

इस उद्देश्य से–

- **सामुदायिक पर्यटन समितियों (Community Tourism Committees)** का गठन किया जाए।
- स्थानीय युवाओं को पर्यटन मार्गदर्शक (Tour Guide), भाषा विशेषज्ञ, आतिथ्य सेवाओं एवं सांस्कृतिक व्याख्या (Interpretation) का प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।
- हस्तशिल्प, स्थानीय उत्पादों एवं पारंपरिक कला के लिए सूक्ष्म वित्त (Microfinance) तथा विपणन सहायता उपलब्ध कराई जाए।
- पर्यटन से प्राप्त आय का एक निश्चित भाग शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में निवेश किया जाए।

5. कौशल विकास एवं रोजगार सृजन (Capacity Building)

पर्यटन क्षेत्र की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए स्थानीय युवाओं को–

- विदेशी भाषाओं,
- आतिथ्य प्रबंधन,
- डिजिटल पर्यटन सेवाओं,
- पर्यटन विपणन,
- सांस्कृतिक मार्गदर्शन,
- आपदा प्रबंधन,

आदि क्षेत्रों में नियमित प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त स्थानीय परिवारों को **होम-स्टे पर्यटन (Homestay Tourism)** से जोड़कर ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहित किया जा सकता है, जिससे पर्यटन से प्राप्त आय का अधिक न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित होगा।

6. सांस्कृतिक कूटनीति एवं अंतरराष्ट्रीय सहयोग

बोधगया की वैश्विक पहचान को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए भारत सरकार एवं बिहार सरकार को–

- अंतरराष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन,
- बौद्ध सांस्कृतिक महोत्सव,
- अकादमिक संगोष्ठियाँ,
- धार्मिक संवाद कार्यक्रम,

नियमित रूप से आयोजित करने चाहिए।

इसके अतिरिक्त **बोधगया-नालंदा-राजगीर** को एक समेकित **"बौद्ध सांस्कृतिक त्रिकोण (Buddhist Cultural Triangle)"** के रूप में वैश्विक स्तर पर प्रचारित किया जाना चाहिए।

थाईलैंड, श्रीलंका, भूटान, जापान, दक्षिण कोरिया एवं वियतनाम जैसे बौद्ध बहुल देशों के साथ प्रत्यक्ष हवाई सेवाओं एवं पर्यटन सहयोग समझौतों का विस्तार भी आवश्यक है।

7. सार्वजनिक-निजी सहभागिता (Public-Private Partnership)

विश्वस्तरीय होटल, सम्मेलन केन्द्र, सांस्कृतिक संग्रहालय तथा पर्यटन सुविधाओं के विकास हेतु **सार्वजनिक-निजी सहभागिता (PPP Model)** को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

पर्यावरण-अनुकूल (Eco-friendly) होटल परियोजनाओं एवं हरित निवेश को विशेष कर प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

8. सुरक्षा एवं विनियमन (Safety and Regulatory Framework)

बोधगया जैसे अंतरराष्ट्रीय धार्मिक केन्द्र में सुरक्षा व्यवस्था को निरंतर अद्यतन रखना आवश्यक है।

इस दिशा में–

- आधुनिक सीसीटीवी नेटवर्क,
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित निगरानी प्रणाली,
- आपदा प्रबंधन तंत्र,
- भीड़ प्रबंधन तकनीक,
- साइबर सुरक्षा व्यवस्था,

को और अधिक सुदृढ़ किया जाना चाहिए।

साथ ही अनधिकृत दलालों, अवैध व्यावसायिक गतिविधियों एवं अनियंत्रित विज्ञापनों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित किया जाना चाहिए, ताकि महाबोधि मंदिर परिसर की गरिमा एवं सांस्कृतिक सौंदर्य अक्षुण्ण बना रहे।

निष्कर्ष (Conclusion)

बोधगया का विकास भारतीय धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक धरोहर संरक्षण तथा सार्वजनिक नीति के अंतर्संबंधों का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। वर्ष **2005 से वर्तमान तक** मुख्यमंत्री **नीतीश कुमार** के नेतृत्व में बिहार सरकार ने बोधगया को एक अंतरराष्ट्रीय बौद्ध तीर्थ एवं पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित करने की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास किए हैं। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप पर्यटन अवसंरचना, परिवहन संपर्क, धरोहर संरक्षण, निवेश आकर्षण तथा अंतरराष्ट्रीय

सहयोग के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पर्यटकों एवं तीर्थयात्रियों की संख्या में निरंतर वृद्धि ने स्थानीय अर्थव्यवस्था को नई गति प्रदान की है। होटल उद्योग, परिवहन, हस्तशिल्प, लघु व्यापार तथा सेवा क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़े हैं और बोधगया की वैश्विक पहचान भी सुदृढ़ हुई है। साथ ही महाबोधि मंदिर परिसर के संरक्षण तथा भारत की सांस्कृतिक कूटनीति को भी इस विकास प्रक्रिया से महत्वपूर्ण बल मिला है।

इसके बावजूद अध्ययन यह भी इंगित करता है कि केवल पर्यटकों की संख्या में वृद्धि को पर्यटन विकास का एकमात्र मानदंड नहीं माना जा सकता। यदि पर्यटन विस्तार के साथ **धरोहर संरक्षण**, **पर्यावरणीय स्थिरता**, **सामाजिक न्याय**, **स्थानीय समुदाय की सहभागिता** तथा **सुशासन** को समान महत्व नहीं दिया गया, तो विकास की प्रक्रिया दीर्घकाल में असंतुलित एवं अस्थिर हो सकती है।

अतः बोधगया के भावी विकास के लिए आवश्यक है कि आर्थिक विकास एवं सांस्कृतिक संरक्षण के मध्य संतुलन स्थापित किया जाए। स्थानीय समुदाय को पर्यटन विकास का सक्रिय भागीदार बनाया जाए तथा विकास प्रक्रिया को सहभागी (Participatory), समावेशी (Inclusive) एवं सतत (Sustainable) सिद्धांतों पर आधारित किया जाए।

यदि बिहार सरकार, भारत सरकार, यूनेस्को, बोधगया मंदिर प्रबंधन समिति तथा स्थानीय समुदाय के मध्य प्रभावी संस्थागत समन्वय स्थापित किया जाता है, तो बोधगया न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए **सतत धार्मिक पर्यटन (Sustainable Pilgrimage Tourism)** का एक आदर्श मॉडल बन सकता है।

अंततः बोधगया का अनुभव यह सिद्ध करता है कि सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण, प्रभावी शासन व्यवस्था, स्थानीय सहभागिता तथा दूरदर्शी सार्वजनिक नीति–इन चारों के समन्वय से धार्मिक पर्यटन को सामाजिक-आर्थिक विकास तथा सांस्कृतिक पुनर्जागरण के एक सशक्त माध्यम में रूपांतरित किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. दास, आर. (2015). *Buddha Gaya Through the Ages*. नई दिल्ली: श्री सतगुरु पब्लिकेशन्स।
2. कुमार, एम., एवं मंडल, एस. (2025). *Tourism and Community Development: A Holistic Perspective from the Local Community in Bodhgaya*. *Journal of Environmental & Earth Sciences*, 7(3), 138-149।
3. दास, आर., सिंह, यू., एवं पटेल, एन. (2023). *Challenges and Prospects of Sustainable Tourism in Bihar*. *International Journal of Creative Research Thoughts*, 11(4), 438-460।
4. पांडेय, वी., एवं अन्य. (2025). *Tourism Trends in Bihar (2001-2022): An Empirical Study*. *International Journal of Creative Research Thoughts*, 13(7), 230-238।
5. कुमार, ए. (सम्पा.). (2015). *Buddhism and Tourism: A Study of Lumbini, Nepal*. *Journal of Tourism and Hospitality Education*, 10, 22-52।
6. यूनेस्को विश्व धरोहर केंद्र। (2011). *Reactive Monitoring Mission Report: Mahabodhi Temple, Bodh Gaya, India*. पेरिस: यूनेस्को।
7. यूनेस्को विश्व धरोहर केंद्र। (2016). *Periodic Reporting: Mahabodhi Temple Complex, Bodh Gaya*. पेरिस: यूनेस्को।
8. भारत सरकार, पर्यटन मंत्रालय। (2023). *India Tourism Statistics 2022*. नई दिल्ली।
9. बिहार सरकार, पर्यटन विभाग। (2023). *Tourism Data and Reports* (अप्रकाशित प्रतिवेदन)।
10. बिहार सरकार, वित्त विभाग। (2025). *Bihar Economic Survey 2024-25*. पटना।
11. विश्व बैंक। (2021). *Tourism, Trade, and Competitiveness in India*. वाशिंगटन, डी.सी.
12. भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय। (2002). *Mahabodhi Temple Complex, Bodhgaya: World Heritage Nomination Dossier*।
13. विश्व धरोहर केंद्र। (1999). *Mahabodhi Temple Complex, Bodh Gaya: Management Plan 1999*. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण।
14. जिला प्रशासन, गया। (2011). *District Gaya: Demographic Details (2011 Census)*।
15. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय। (2018). *Bodh Gaya Pilgrimage and Tourism* (अप्रकाशित शोध प्रबंध)।